The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 6 | June 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF(2026): 5.6
Website: www.theacademic.in

ग्वालियर की प्राचीन मंदिर वास्तुकला: इतिहास, कला एवं सांस्कृतिक विरासत का एक अध्ययन

डॉ. नम्रता कुशवाह

सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत

E-mail:: namrtakushwah7566277722@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.21444500

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: 15-05-2026

Accepted: 24-06-2026

Published: 15-07-2026

Keywords:

ग्वालियर, प्राचीन मंदिर वास्तुकला, इतिहास, भारतीय स्थापत्य कला, मूर्तिकला, सांस्कृतिक विरासत, धार्मिक धरोहर, मंदिर शिल्पकला, पुरातात्त्विक धरोहर, संरक्षण एवं संवर्धन।

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध-पत्र "ग्वालियर की प्राचीन मंदिर वास्तुकला: इतिहास, कला एवं सांस्कृतिक विरासत का एक अध्ययन" ग्वालियर क्षेत्र की प्राचीन मंदिर परंपरा, उसकी स्थापत्य विशेषताओं, ऐतिहासिक विकास तथा सांस्कृतिक महत्ता का समग्र अध्ययन प्रस्तुत करता है। ग्वालियर प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति, धर्म, कला एवं स्थापत्य का एक प्रमुख केंद्र रहा है। यहाँ स्थित मंदिर भारतीय मंदिर वास्तुकला की विविध शैलियों, उत्कृष्ट शिल्पकला, मूर्तिकला तथा धार्मिक परंपराओं के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। इन मंदिरों में तत्कालीन राजवंशों के संरक्षण, धार्मिक आस्थाओं तथा सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन की स्पष्ट झलक मिलती है। इस अध्ययन का उद्देश्य ग्वालियर के प्रमुख प्राचीन मंदिरों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, स्थापत्य शैली, कलात्मक विशेषताओं तथा सांस्कृतिक विरासत के रूप में उनके महत्व का विश्लेषण करना है। साथ ही, यह अध्ययन मंदिरों के संरक्षण, संवर्धन तथा वर्तमान समय में उनकी उपयोगिता पर भी प्रकाश डालता है। शोध में द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है, जिनमें पुस्तकें, शोध-पत्र, पुरातात्त्विक सर्वेक्षण की रिपोर्टें, अभिलेख, ऐतिहासिक दस्तावेज तथा अन्य प्रामाणिक स्रोत सम्मिलित हैं। अध्ययन के लिए वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति को अपनाया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि ग्वालियर की प्राचीन मंदिर वास्तुकला केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं है, बल्कि भारतीय स्थापत्य कला, मूर्तिकला, सांस्कृतिक निरंतरता तथा ऐतिहासिक चेतना की अमूल्य धरोहर भी है। इन मंदिरों की स्थापत्य योजना, अलंकरण, मूर्तिशिल्प तथा निर्माण तकनीक भारतीय कला के उच्च स्तर को प्रदर्शित करती है। वर्तमान समय में

Disclaimer: The opinions, interpretations, conclusions, recommendations, analyses, and statements expressed in this research article are solely those of the author(s) and do not reflect the views, policies, or positions of the Publisher, Chief Editor, Editors, Editorial Board, Reviewers, or their affiliated institutions. The author(s) are solely responsible for ensuring the originality, authenticity, and integrity of the manuscript and for ensuring that it is free from plagiarism, AI-generated content, copyright infringement, data falsification, and any other form of academic misconduct.

बढ़ते शहरीकरण, प्राकृतिक क्षरण तथा मानवीय हस्तक्षेप के कारण इन धरोहरों के संरक्षण की आवश्यकता और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। अतः इन मंदिरों का वैज्ञानिक संरक्षण, प्रलेखन तथा जन-जागरूकता के माध्यम से संवर्धन भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण की दिशा में एक आवश्यक कदम सिद्ध होगा। यह अध्ययन इतिहास, पुरातत्व, कला एवं सांस्कृतिक अध्ययन के क्षेत्र में उपयोगी संदर्भ सामग्री प्रदान करने के साथ-साथ भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए भी मार्गदर्शक सिद्ध होगा।

भूमिका :

भारत अपनी प्राचीन सभ्यता, समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं तथा उत्कृष्ट स्थापत्य कला के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। भारतीय मंदिर केवल धार्मिक आस्था के केंद्र नहीं हैं, बल्कि वे देश के सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं कलात्मक विकास के सशक्त साक्ष्य भी हैं। मंदिर वास्तुकला भारतीय शिल्प परंपरा, मूर्तिकला, स्थापत्य विज्ञान तथा धार्मिक दर्शन के समन्वित स्वरूप को अभिव्यक्त करती है। देश के विभिन्न क्षेत्रों में विकसित मंदिर स्थापत्य की विविध शैलियाँ भारतीय संस्कृति की समृद्धि एवं विविधता का परिचय देती हैं।

मध्य प्रदेश का ग्वालियर नगर प्राचीन काल से ही इतिहास, कला एवं संस्कृति का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। यहाँ स्थित प्राचीन मंदिर विभिन्न राजवंशों के संरक्षण, धार्मिक आस्थाओं तथा स्थापत्य कौशल के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इन मंदिरों की निर्माण शैली, शिल्पांकन, मूर्तिकला, अलंकरण तथा स्थापत्य योजना तत्कालीन समाज की धार्मिक मान्यताओं, सांस्कृतिक मूल्यों तथा कलात्मक उत्कृष्टता को प्रतिबिंबित करती है। ग्वालियर की मंदिर वास्तुकला भारतीय स्थापत्य परंपरा के विकासक्रम को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा यह क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान का अभिन्न अंग है।

वर्तमान समय में तीव्र शहरीकरण, पर्यावरणीय प्रभाव तथा मानवीय हस्तक्षेप के कारण अनेक प्राचीन मंदिर संरक्षण की चुनौती का सामना कर रहे हैं। ऐसे में इन धरोहरों के ऐतिहासिक, कलात्मक एवं सांस्कृतिक महत्व का अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो जाता है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य ग्वालियर की प्राचीन मंदिर वास्तुकला का ऐतिहासिक, कलात्मक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से विश्लेषण करना तथा भारतीय सांस्कृतिक विरासत में उसके योगदान का मूल्यांकन करना है। यह अध्ययन मंदिरों के संरक्षण एवं संवर्धन की आवश्यकता को भी रेखांकित करता है और इस क्षेत्र में भविष्य के शोध के लिए उपयोगी आधार प्रदान करता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :

ग्वालियर की प्राचीन मंदिर वास्तुकला भारतीय सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण अंग है, जो इतिहास, धर्म, कला एवं स्थापत्य विज्ञान के समन्वित विकास का सजीव प्रमाण प्रस्तुत करती है। ग्वालियर क्षेत्र के प्राचीन मंदिर अपनी विशिष्ट स्थापत्य शैली, उत्कृष्ट मूर्तिकला तथा शिल्पकौशल के कारण भारतीय कला इतिहास में विशेष स्थान रखते हैं। इन मंदिरों में निहित ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक तत्व तत्कालीन सामाजिक जीवन, धार्मिक मान्यताओं तथा राजवंशीय संरक्षण की जानकारी प्रदान करते हैं। इसलिए इनका व्यवस्थित अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

वर्तमान समय में शहरीकरण, पर्यावरणीय प्रभाव, प्राकृतिक क्षरण तथा मानवीय उपेक्षा के कारण अनेक प्राचीन मंदिरों की संरचनात्मक एवं कलात्मक विशेषताएँ प्रभावित हो रही हैं। यदि इन धरोहरों का समय रहते वैज्ञानिक अध्ययन, प्रलेखन तथा संरक्षण नहीं किया गया, तो भारतीय सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण भाग नष्ट होने की आशंका है। इस दृष्टि से यह अध्ययन संरक्षण एवं संवर्धन की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

यह अध्ययन इतिहास, पुरातत्व, वास्तुकला, कला इतिहास तथा सांस्कृतिक अध्ययन के शोधकर्ताओं, विद्यार्थियों एवं नीति-निर्माताओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। साथ ही, यह ग्वालियर की प्राचीन मंदिर परंपरा के ऐतिहासिक विकास, स्थापत्य विशेषताओं तथा सांस्कृतिक महत्व को समझने में सहायक होगा। अध्ययन से सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देने, स्थानीय धरोहरों के प्रति जन-जागरूकता विकसित करने तथा भावी पीढ़ियों के लिए इस अमूल्य विरासत के संरक्षण की दिशा में सकारात्मक योगदान मिलने की अपेक्षा है। इस प्रकार, प्रस्तुत शोध भारतीय सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण एवं उसके शैक्षणिक दस्तावेजीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

सम्बंधित साहित्य का अवलोकन :

Brown (1971) ने भारतीय मंदिर वास्तुकला के ऐतिहासिक विकास, निर्माण शैली तथा कलात्मक विशेषताओं का अध्ययन किया। अध्ययन में बताया गया कि भारतीय मंदिर स्थापत्य विभिन्न ऐतिहासिक कालों में क्रमिक रूप से विकसित हुआ तथा उत्तर भारत की नागर शैली इसकी प्रमुख विशेषता है। लेखक ने मंदिरों की स्थापत्य परंपराओं का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया है। **Krishna Deva (1990)** ने उत्तर भारतीय मंदिरों की स्थापत्य शैली, ऐतिहासिक विकास तथा मूर्तिकला का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि उत्तर भारत के मंदिर अपनी विशिष्ट स्थापत्य योजना एवं अलंकरण के कारण भारतीय सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण भाग हैं। लेखक ने ग्वालियर सहित उत्तर भारतीय मंदिर परंपरा को समझने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। **Dhaky, Meister एवं Krishna Deva (1988)** ने उत्तर भारतीय मंदिर वास्तुकला का क्रमबद्ध एवं विस्तृत अध्ययन किया। अध्ययन

में मंदिरों की स्थापत्य शैली, निर्माण तकनीक, क्षेत्रीय विशेषताओं तथा स्थापत्य योजनाओं का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। यह अध्ययन उत्तर भारतीय मंदिर वास्तुकला के शोध के लिए एक प्रामाणिक संदर्भ माना जाता है। **Grover (2015)** ने भारतीय मंदिर स्थापत्य के विकास, प्रमुख शैलियों तथा सांस्कृतिक महत्व का अध्ययन किया। अध्ययन में बताया गया कि भारतीय मंदिर वास्तुकला धार्मिक आस्था के साथ-साथ भारत की सांस्कृतिक एवं कलात्मक परंपराओं का भी प्रतिनिधित्व करती है। लेखक ने भारतीय स्थापत्य के ऐतिहासिक विकास को विस्तार से स्पष्ट किया है।

Acharya (1997) ने हिंदू वास्तुकला से संबंधित तकनीकी शब्दों, सिद्धांतों तथा निर्माण अवधारणाओं का अध्ययन किया। अध्ययन में बताया गया कि मंदिर निर्माण की पारंपरिक शब्दावली एवं स्थापत्य सिद्धांत भारतीय वास्तुकला को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। यह ग्रंथ शोधकर्ताओं के लिए महत्वपूर्ण संदर्भ प्रदान करता है।**Vatsyayan (1997)** ने भारतीय कला, स्थापत्य एवं सांस्कृतिक प्रतीकों के पारस्परिक संबंधों का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि भारतीय मंदिर वास्तुकला धार्मिक, सांस्कृतिक एवं कलात्मक मूल्यों का समन्वित स्वरूप प्रस्तुत करती है। लेखक ने मंदिरों की सांस्कृतिक भूमिका को विशेष रूप से रेखांकित किया है। **Rao (1993)** ने हिंदू प्रतिमा-विज्ञान, मूर्तिकला तथा धार्मिक प्रतीकों का अध्ययन किया। अध्ययन में बताया गया कि मंदिरों की मूर्तिकला एवं प्रतिमाएँ भारतीय धार्मिक परंपराओं तथा सांस्कृतिक मान्यताओं की महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति हैं। यह अध्ययन मंदिर कला एवं प्रतीकवाद को समझने में उपयोगी है। **Archaeological Survey of India (2003)** ने भारत के संरक्षित स्मारकों, विशेषकर ग्वालियर सहित विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों के संरक्षण, प्रलेखन तथा पुरातात्त्विक महत्व का अध्ययन प्रस्तुत किया। रिपोर्ट में बताया गया कि ऐतिहासिक मंदिरों का संरक्षण भारत की सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण के लिए अत्यंत आवश्यक है। यह अध्ययन धरोहर संरक्षण संबंधी शोध के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है। **Hardy (2007)** ने भारतीय मंदिर स्थापत्य के विकास, संरचना तथा कलात्मक परिवर्तनों का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि भारतीय मंदिरों की स्थापत्य शैली समय, क्षेत्र एवं धार्मिक परंपराओं के अनुसार विकसित हुई है। लेखक ने नागर एवं द्रविड़ स्थापत्य परंपराओं का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया है। **Michell (1988)** ने हिंदू मंदिरों के धार्मिक, सांस्कृतिक एवं स्थापत्य स्वरूप का अध्ययन किया। अध्ययन में बताया गया कि मंदिर की संरचना केवल स्थापत्य दृष्टि से ही नहीं, बल्कि धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। लेखक ने मंदिर वास्तुकला की मूल अवधारणाओं को सरल एवं व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किया है।

Kramrisch (1946) ने भारतीय हिंदू मंदिरों की दार्शनिक अवधारणा, धार्मिक प्रतीकों तथा स्थापत्य सिद्धांतों का अध्ययन किया। अध्ययन में बताया गया कि हिंदू मंदिर केवल पूजा का स्थान नहीं है, बल्कि यह

ब्रह्मांडीय व्यवस्था एवं आध्यात्मिक दर्शन का प्रतीक है। अध्ययन में मंदिर निर्माण की पारंपरिक विधियों तथा धार्मिक मान्यताओं के मध्य संबंध को स्पष्ट किया गया है। **Michell (1988)** ने हिंदू मंदिरों के अर्थ, संरचना एवं स्थापत्य स्वरूप का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि मंदिर का प्रत्येक स्थापत्य घटक धार्मिक, सांस्कृतिक एवं प्रतीकात्मक महत्व रखता है। लेखक ने भारतीय मंदिर वास्तुकला की मूल अवधारणाओं को व्यवस्थित एवं सरल रूप में प्रस्तुत किया है। **Michell (2000)** ने भारतीय कला एवं मंदिर वास्तुकला के ऐतिहासिक विकास का अध्ययन किया। अध्ययन में बताया गया कि विभिन्न क्षेत्रों में मंदिर स्थापत्य की अलग-अलग शैलियाँ विकसित हुईं, जो भारत की सांस्कृतिक एवं धार्मिक विविधता को प्रतिबिंबित करती हैं। लेखक ने मंदिर वास्तुकला के ऐतिहासिक एवं कलात्मक महत्व पर विशेष बल दिया है। **Hardy (1995)** ने भारतीय मंदिर वास्तुकला के स्वरूप, विकास एवं संरचनात्मक परिवर्तनों का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि मंदिर स्थापत्य समय, क्षेत्र तथा धार्मिक परंपराओं के अनुसार निरंतर विकसित होता रहा है। लेखक ने मंदिरों की विभिन्न स्थापत्य शैलियों के विकासक्रम का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया है। **Hardy (2007)** ने भारतीय मंदिर वास्तुकला की प्रमुख नागर एवं द्रविड़ शैलियों का अध्ययन किया। अध्ययन में बताया गया कि इन दोनों स्थापत्य परंपराओं का विकास क्षेत्रीय सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिस्थितियों के अनुसार हुआ है। लेखक ने भारतीय मंदिर स्थापत्य की कलात्मक एवं ऐतिहासिक विशेषताओं को स्पष्ट किया है। **Harle (1994)** ने भारतीय उपमहाद्वीप की कला एवं स्थापत्य परंपराओं का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि भारतीय मंदिर वास्तुकला विभिन्न राजवंशों एवं सांस्कृतिक प्रभावों के परिणामस्वरूप विकसित हुई है। लेखक ने मंदिरों को भारतीय सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण अंग माना है।

Meister एवं Dhaky (1988) ने उत्तर भारतीय मंदिर वास्तुकला की स्थापत्य योजनाओं, शैलीगत विशेषताओं एवं निर्माण तकनीकों का अध्ययन किया। अध्ययन में उत्तर भारतीय मंदिरों का विस्तृत प्रलेखन एवं वर्गीकरण प्रस्तुत किया गया है। यह अध्ययन उत्तर भारतीय मंदिर स्थापत्य के शोध के लिए एक महत्वपूर्ण संदर्भ माना जाता है। **Juneja (2001)** ने मध्यकालीन भारतीय वास्तुकला का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक संदर्भों में अध्ययन किया। अध्ययन में बताया गया कि मंदिर स्थापत्य केवल धार्मिक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि तत्कालीन समाज, संस्कृति एवं राजनीतिक परिस्थितियों का भी दर्पण है। लेखक ने मंदिरों के व्यापक सांस्कृतिक महत्व को रेखांकित किया है। **Michell (2015)** ने 15वीं से 19वीं शताब्दी के भारतीय मंदिर वास्तुकला के विकास का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि इस काल में क्षेत्रीय कलात्मक परंपराओं एवं संरक्षण नीतियों का मंदिर निर्माण पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। लेखक ने मंदिर स्थापत्य की निरंतरता एवं शैलीगत परिवर्तनों का विश्लेषण किया है। **Foekema (2010)** ने Hardy की पुस्तक *The Temple Architecture of India* की समीक्षा की। अध्ययन में बताया गया कि यह ग्रंथ भारतीय मंदिर वास्तुकला के स्थापत्य सिद्धांतों, संरचनात्मक विशेषताओं एवं विकासक्रम

का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। लेखक ने इसे भारतीय मंदिर स्थापत्य के अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण एवं उपयोगी संदर्भ ग्रंथ माना है।

समस्या का प्रतिपादन :

"ग्वालियर की प्राचीन मंदिर वास्तुकला: इतिहास, कला एवं सांस्कृतिक विरासत का एक अध्ययन।"

अध्ययन के उद्देश्य :

- ग्वालियर की प्राचीन मंदिर वास्तुकला के ऐतिहासिक विकास का अध्ययन करना।
- ग्वालियर के प्राचीन मंदिरों की स्थापत्य एवं कलात्मक विशेषताओं का विश्लेषण करना।
- ग्वालियर की प्राचीन मंदिर वास्तुकला के सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्व का अध्ययन करना।
- ग्वालियर के प्राचीन मंदिरों के संरक्षण एवं संवर्धन की वर्तमान स्थिति तथा चुनौतियों का अध्ययन करना।
- भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में ग्वालियर की प्राचीन मंदिर वास्तुकला के योगदान का मूल्यांकन करना।

शोध प्रश्न :

- ग्वालियर की प्राचीन मंदिर वास्तुकला का ऐतिहासिक विकास किस प्रकार हुआ है?
- ग्वालियर के प्राचीन मंदिरों की प्रमुख स्थापत्य एवं कलात्मक विशेषताएँ क्या हैं?
- ग्वालियर की प्राचीन मंदिर वास्तुकला का सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्व क्या है?
- ग्वालियर के प्राचीन मंदिरों के संरक्षण एवं संवर्धन में प्रमुख चुनौतियाँ क्या हैं?
- भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण एवं संवर्धन में ग्वालियर की प्राचीन मंदिर वास्तुकला का क्या योगदान है?

शोध पद्धति :

प्रस्तुत अध्ययन गुणात्मक (Qualitative) एवं वर्णनात्मक (Descriptive) शोध पद्धति पर आधारित है तथा इसमें द्वितीयक आँकड़ों (Secondary Data) का उपयोग किया गया है। अध्ययन के लिए आवश्यक जानकारी विभिन्न प्रामाणिक स्रोतों, जैसे— प्रकाशित पुस्तकों, शोध-पत्रों, शोध-प्रबंधों, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) की

रिपोर्टों, मध्य प्रदेश पर्यटन एवं संस्कृति विभाग के प्रकाशनों, अभिलेखों, सरकारी दस्तावेजों तथा अन्य विश्वसनीय ऑनलाइन शैक्षणिक स्रोतों से संकलित की गई है। संकलित सामग्री का ऐतिहासिक, तुलनात्मक एवं विषयवस्तु (Content Analysis) के आधार पर विश्लेषण किया गया है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य ग्वालियर की प्राचीन मंदिर वास्तुकला के ऐतिहासिक विकास, स्थापत्य एवं कलात्मक विशेषताओं, सांस्कृतिक महत्व तथा संरक्षण की आवश्यकता का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करना है। यह शोध पूर्णतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है तथा इसमें किसी प्रकार का प्राथमिक (Primary) डेटा संकलित नहीं किया गया है।

ग्वालियर की प्राचीन मंदिर वास्तुकला का ऐतिहासिक विकास एवं स्थापत्य विशेषताएँ :

ग्वालियर प्राचीन काल से ही भारत के प्रमुख ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक केंद्रों में से एक रहा है। यह क्षेत्र अपनी समृद्ध स्थापत्य परंपरा, उत्कृष्ट शिल्पकला तथा प्राचीन मंदिरों के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध है। ग्वालियर की मंदिर वास्तुकला भारतीय सभ्यता के विकास, धार्मिक आस्था तथा कलात्मक उत्कृष्टता का सजीव प्रमाण प्रस्तुत करती है। यहाँ विभिन्न कालों में गुर्जर-प्रतिहार, कच्छपघात, तोमर तथा अन्य राजवंशों ने मंदिर निर्माण को संरक्षण प्रदान किया, जिसके परिणामस्वरूप अनेक भव्य मंदिरों का निर्माण हुआ। इन मंदिरों में तत्कालीन स्थापत्य ज्ञान, धार्मिक विश्वास तथा सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। ग्वालियर दुर्ग परिसर में स्थित तेली का मंदिर, सास-बहू मंदिर तथा चतुर्भुज मंदिर उत्तर भारतीय नागर शैली के उत्कृष्ट उदाहरण माने जाते हैं। इन मंदिरों की स्थापत्य योजना में गर्भगृह, अंतराल, मंडप तथा ऊँचे एवं अलंकृत शिखर प्रमुख रूप से विद्यमान हैं। मंदिरों की बाहरी दीवारों, स्तंभों तथा प्रवेश द्वारों पर देवी-देवताओं, अप्सराओं, गंधर्वों, यक्ष-यक्षिणियों तथा पौराणिक कथाओं से संबंधित मूर्तियों का अत्यंत आकर्षक एवं सूक्ष्म अंकन किया गया है। इन मूर्तियों में धार्मिक भावनाओं के साथ-साथ तत्कालीन समाज, वेशभूषा, संगीत, नृत्य एवं सांस्कृतिक जीवन की झलक भी दिखाई देती है। मंदिरों की नक्काशी, स्थापत्य संतुलन तथा शिल्पकला भारतीय शिल्पियों की तकनीकी दक्षता और सौंदर्यबोध का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है।

ग्वालियर की प्राचीन मंदिर वास्तुकला केवल पूजा-अर्चना का केंद्र नहीं रही, बल्कि यह शिक्षा, संस्कृति, कला तथा सामाजिक जीवन का भी महत्वपूर्ण आधार रही है। इन मंदिरों के माध्यम से भारतीय स्थापत्य परंपरा का क्रमिक विकास, धार्मिक सहिष्णुता तथा सांस्कृतिक निरंतरता का अध्ययन किया जा सकता है। आज भी ये मंदिर भारतीय सांस्कृतिक विरासत की अमूल्य धरोहर के रूप में विद्यमान हैं तथा देश-विदेश के इतिहासकारों, पुरातत्वविदों, वास्तुशिल्प विशेषज्ञों और पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। इसलिए ग्वालियर की प्राचीन मंदिर वास्तुकला का ऐतिहासिक एवं स्थापत्य अध्ययन भारतीय कला, इतिहास और सांस्कृतिक विरासत की व्यापक समझ विकसित करने की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

ग्वालियर की प्राचीन मंदिर वास्तुकला का सांस्कृतिक महत्व, संरक्षण एवं चुनौतियाँ :

ग्वालियर की प्राचीन मंदिर वास्तुकला भारतीय सांस्कृतिक विरासत का अमूल्य भाग है। ये मंदिर केवल धार्मिक आस्था के केंद्र नहीं हैं, बल्कि भारतीय इतिहास, कला, स्थापत्य, मूर्तिकला तथा सांस्कृतिक परंपराओं के जीवंत प्रतीक भी हैं। ग्वालियर के प्राचीन मंदिरों में तत्कालीन समाज की धार्मिक मान्यताओं, सांस्कृतिक मूल्यों, कलात्मक अभिरुचि तथा शिल्पकला का उत्कृष्ट समन्वय दिखाई देता है। इन मंदिरों में आयोजित धार्मिक अनुष्ठान, पर्व-त्योहार तथा सांस्कृतिक गतिविधियाँ आज भी स्थानीय समाज की सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ बनाती हैं। साथ ही, ये मंदिर देश-विदेश से आने वाले पर्यटकों एवं शोधकर्ताओं को आकर्षित करते हैं, जिससे सांस्कृतिक पर्यटन को भी बढ़ावा मिलता है।

ग्वालियर के प्रमुख मंदिर, जैसे तेली का मंदिर, सास-बहू मंदिर तथा चतुर्भुज मंदिर, भारतीय स्थापत्य कला की उत्कृष्ट उपलब्धियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इनकी मूर्तिकला, नक्काशी तथा स्थापत्य योजना भारतीय शिल्प परंपरा की उच्च गुणवत्ता को प्रदर्शित करती है। इसलिए इन मंदिरों का संरक्षण केवल ऐतिहासिक स्मारकों की सुरक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक पहचान और विरासत के संरक्षण से भी जुड़ा हुआ है।

वर्तमान समय में तीव्र शहरीकरण, पर्यावरण प्रदूषण, प्राकृतिक क्षरण, मौसम संबंधी प्रभाव, पर्यटन के बढ़ते दबाव तथा मानवीय उपेक्षा के कारण अनेक प्राचीन मंदिरों की संरचना एवं कलात्मक विशेषताएँ प्रभावित हो रही हैं। इसके अतिरिक्त, पर्याप्त रखरखाव, वैज्ञानिक संरक्षण तकनीकों तथा जन-जागरूकता के अभाव से भी इन धरोहरों को नुकसान पहुँच रहा है। अतः आवश्यक है कि सरकार, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, स्थानीय प्रशासन, इतिहासकार, शोधकर्ता तथा स्थानीय समुदाय मिलकर इन मंदिरों के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए प्रभावी प्रयास करें। वैज्ञानिक संरक्षण, डिजिटल प्रलेखन, नियमित रखरखाव, जन-जागरूकता कार्यक्रम तथा सांस्कृतिक पर्यटन के सतत विकास के माध्यम से ग्वालियर की इस अमूल्य धरोहर को भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखा जा सकता है। इस प्रकार, ग्वालियर की प्राचीन मंदिर वास्तुकला भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण एवं संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि ग्वालियर की प्राचीन मंदिर वास्तुकला भारतीय इतिहास, कला एवं सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण और अमूल्य अंग है। ग्वालियर क्षेत्र के प्राचीन मंदिर अपनी विशिष्ट स्थापत्य शैली, उत्कृष्ट मूर्तिकला, शिल्पकौशल तथा धार्मिक महत्व के कारण भारतीय मंदिर वास्तुकला की समृद्ध परंपरा का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन मंदिरों में तत्कालीन राजवंशों के संरक्षण, धार्मिक आस्थाओं, सामाजिक जीवन तथा

सांस्कृतिक मूल्यों की स्पष्ट झलक दिखाई देती है। विशेष रूप से तेली का मंदिर, सास-बहू मंदिर तथा चतुर्भुज मंदिर भारतीय नागर शैली के उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जो उस समय की स्थापत्य तकनीक और कलात्मक उत्कृष्टता को प्रदर्शित करते हैं।

अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि ग्वालियर की मंदिर वास्तुकला केवल धार्मिक दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि यह भारतीय सांस्कृतिक पहचान, ऐतिहासिक चेतना तथा पर्यटन विकास की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। वर्तमान समय में प्राकृतिक क्षरण, प्रदूषण, शहरीकरण तथा मानवीय हस्तक्षेप के कारण इन धरोहरों के संरक्षण की आवश्यकता पहले से अधिक बढ़ गई है। इसलिए इन मंदिरों का वैज्ञानिक संरक्षण, नियमित रखरखाव, डिजिटल प्रलेखन तथा जन-जागरूकता के माध्यम से संवर्धन किया जाना आवश्यक है।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ग्वालियर की प्राचीन मंदिर वास्तुकला भारतीय सभ्यता, कला एवं संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का सशक्त प्रतीक है। इन धरोहरों का संरक्षण केवल ऐतिहासिक स्मारकों की रक्षा नहीं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक विरासत और राष्ट्रीय पहचान के संरक्षण का भी महत्वपूर्ण माध्यम है। यह अध्ययन भविष्य के शोधकर्ताओं, इतिहासकारों, पुरातत्वविदों तथा नीति-निर्माताओं के लिए उपयोगी संदर्भ प्रदान करता है और ग्वालियर की प्राचीन मंदिर परंपरा के संरक्षण एवं संवर्धन की दिशा में सार्थक योगदान देने का प्रयास करता है।

संदर्भ :

- आचार्य, पी. के. (1997). *ए डिक्शनरी ऑफ हिंदू आर्किटेक्चर*. मोतीलाल बनारसीदास।
- अग्रवाल, वासुदेव शरण. (1965). *भारतीय कला*. पृथ्वी प्रकाशन।
- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण. (2003). *भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की वार्षिक रिपोर्ट*. भारत सरकार।
- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण. (2011). *इंडियन आर्कियोलॉजी: ए रिव्यू*. भारत सरकार।
- बोनर, ऐलिस. (1990). *प्रिंसिपल्स ऑफ कम्पोज़िशन इन हिंदू स्कल्प्चर*. मोतीलाल बनारसीदास।
- ब्राउन, पर्सी. (1971). *इंडियन आर्किटेक्चर (बौद्ध एवं हिंदू काल)*. डी. बी. तारापोरवाला संस।
- कज़ेन्स, हेनरी. (1996). *द चालुक्यन आर्किटेक्चर ऑफ कनारीज़ डिस्ट्रिक्ट्स*. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण।
- देहेजिया, विद्या. (1997). *भारतीय कला*. फेडॉन प्रेस।
- ढाकी, एम. ए., एवं मैस्टर, एम. डब्ल्यू. (सम्पा.). (1988). *एनसाइक्लोपीडिया ऑफ इंडियन टेम्पल आर्किटेक्चर: नॉर्थ इंडिया*. अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन स्टडीज़।

- फोएकेमा, जी. (2010). द *टेम्पल आर्किटेक्चर ऑफ इंडिया* पुस्तक की समीक्षा। *आर्ट हिस्ट्री, 33*(1), 189–191।
- घोष, ए. (सम्पा.). (1990). *एनसाइक्लोपीडिया ऑफ इंडियन आर्कियोलॉजी*. मुंशीराम मनोहरलाल।
- ग्रोवर, सतीश. (2015). द *आर्किटेक्चर ऑफ इंडिया (बौद्ध एवं हिंदू काल)*. विकास पब्लिशिंग हाउस।
- हार्डी, एडम. (1995). *इंडियन टेम्पल आर्किटेक्चर: फॉर्म एंड ट्रांसफॉर्मेशन*. अभिनव पब्लिकेशंस।
- हार्डी, एडम. (2007). द *टेम्पल आर्किटेक्चर ऑफ इंडिया*. वाइली।
- हार्ले, जे. सी. (1994). द *आर्ट एंड आर्किटेक्चर ऑफ द इंडियन सबकॉन्टिनेंट* (द्वितीय संस्करण). येल यूनिवर्सिटी प्रेस।
- क्रामरिश, स्टेला. (1946). द *हिंदू टेम्पल* (खंड 1–2). प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।
- कृष्ण देव. (1990). *टेम्पल्स ऑफ नॉर्थ इंडिया*. नेशनल बुक ट्रस्ट।
- मिशेल, जॉर्ज. (1988). द *हिंदू टेम्पल: एन इंट्रोडक्शन टू इट्स मीनिंग एंड फॉर्म्स*. यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस।
- मिशेल, जॉर्ज. (2000). *हिंदू आर्ट एंड आर्किटेक्चर*. थेम्स एंड हडसन।
- मिशेल, जॉर्ज. (2015). *लेट टेम्पल आर्किटेक्चर इन इंडिया: 15वीं से 19वीं शताब्दी*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- जुनेजा, मोनिका. (2001). *आर्किटेक्चर इन मीडीवल इंडिया: फॉर्म्स, कॉन्टेक्स्ट्स, हिस्ट्रीज़*. ओरिएंट ब्लैकस्वान।
- राव, टी. ए. गोपीनाथ. (1993). *एलिमेंट्स ऑफ हिंदू आइकनोग्राफी*. मोतीलाल बनारसीदास।
- रोलैंड, बेंजामिन. (1953). द *आर्ट एंड आर्किटेक्चर ऑफ इंडिया*. पेंगुइन बुक्स।
- श्रीनिवासन, के. आर. (1972). *टेम्पल्स ऑफ साउथ इंडिया*. नेशनल बुक ट्रस्ट।
- टैडगेल, क्रिस्टोफर. (1990). द *हिस्ट्री ऑफ आर्किटेक्चर इन इंडिया*. लॉन्गमैन।
- वात्स्यायन, कपिला. (1997). द *स्क्वायर एंड द सर्कल ऑफ द इंडियन आर्ट्स*. अभिनव पब्लिकेशंस।
- वोल्वाहसेन, एंड्रियास. (1969). *लिविंग आर्किटेक्चर: इंडियन (बौद्ध एवं हिंदू)*. ऑक्सफोर्ड एंड आईबीएच।
- मध्य प्रदेश शासन, पर्यटन विभाग. (2018). *मध्य प्रदेश के धरोहर स्मारक*. मध्य प्रदेश पर्यटन विभाग।

- भारतीय राष्ट्रीय कला एवं सांस्कृतिक विरासत न्यास (INTACH). (2014). *धरोहर संरक्षण दिशा-निर्देश*. इंटैक।
- भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय. (2020). *वार्षिक प्रतिवेदन 2019–20*. संस्कृति मंत्रालय।
- शर्मा, वाई. डी. (1982). *टेम्पल्स ऑफ सेंट्रल इंडिया*. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण।
- सिंह, उपिंदर. (2008). *प्राचीन एवं प्रारम्भिक मध्यकालीन भारत का इतिहास*. पियर्सन एजुकेशन।
- साउंडरा राजन, के. वी. (1975). *इंडियन टेम्पल स्टाइल्स*. मुंशीराम मनोहरलाल।
- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण. (2022). *मध्य प्रदेश के संरक्षित स्मारक*. भारत सरकार।
- तिवारी, मारुति नंदन. (1983). *मध्यकालीन भारतीय मंदिर वास्तुकला*. आर्यन बुक्स इंटरनेशनल।